संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। रोज ऑफ शेरोन चर्च के सभी सदस्यों को चर्च की सालगिरह की बहुत–बहुत शुभकामनाएं। हमारे प्रभु यीशु प्रत्येक परिवार के कोने का पत्थर बने रहें, और आप आज और हमेशा उनकी छाया में बने रहें।

यशायाह 59:19 ''तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का, और पूर्व की ओर उसकी महिमा का भय मानेंगे; क्योंकि जब शत्रु महानद के समान चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा।'' हमारे आस–पास के शत्रु गरजते हुए समुद्र के रूप में आ सकते हैं और हमें अपने तरीके से डुबाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन केवल हमारा प्रभु ही हमें उनका झण्डा ले जाने में मदद करेंगे। हम जिस दुनिया में रहते हैं, उसमें बुराई किसी भी रूप में आ सकती है; लेकिन प्रभु के साथ, दुश्मन को एक मौका भी नहीं मिलेगा की वह खड़ा हो सके। मूसा ने केवल यहोवा की बात मानी और केवल फसह के लहू को इस्राएलियों के द्वार पर उनकी आज्ञा के अनुसार लगाया। तब यहोवा की बारी थी। उन्होंने आकर मिस्रियों के पहलौठों का नाश किया, और अपने लोगों को विजय प्रदान की। इससे हम क्या सीखते हैं?... कि हमें केवल आज्ञा मानने और प्रभु के वचन में विश्वास में खड़े रहने की आवश्यकता है, और वह बाकी काम करेंगे!

भजन संहिता 55:22 ''अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा।'' हम आज भले ही पीड़ित और परेशान हों, लेकिन हमें अपने बोझों को अपने प्रभु पर डालना सीखना होगा। हम सोच सकते हैं कि हम अपने सभी दुखों और बोझों को संभाल सकते हैं लेकिन ऐसा नहीं है। 1 पतरस 5:7 ''अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।'' हमारे तनाव कितने भी बड़े या छोटे हों – जब हम उसे प्रभु के हाथों में देंगे, तो वह हमारे जीवन को संभालेंगे और हमें जीत दिलाएंगे। उनके समय में, वह सब कुछ ठीक कर देंगे। हमें परमेश्वर के हाथों के कार्य में विश्वास करना चाहिए, और वह इसे सफलतापूर्वक पूरा करेंगे। प्रभु, स्वयं हमारी सभी चिंताओं के बारे में चिंतित हैं। जब हम अपनी सारी चिंताओं को उसके हाथों में दे देंगे, तो वह हमें मुक्त कर देंगे। वचन कहता है, *'आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु परमेश्वर का वचन कभी न टलेगा।'*

यशायाह 9:6 ''क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।'' दाऊद ने अपनी विजय केवल परमेश्वर के नाम पर प्राप्त की। आज हमारे भी कई शत्रु हो सकते हैं, और वे हमें कभी न कभी परेशान करेंगे। परन्तु, परमेश्वर अपने समय में सब कुछ ठीक कर देंगे। मूसा, दाऊद और दानिय्येल पवित्र शास्त्र के सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों में से थे, फिर भी उन्होंने भी यह कठिन सबक सीखा, अर्थात्, *'न शक्ति से, न सामर्थ से, बल्कि केवल प्रभु की आत्मा के द्वारा,'* हमें हमारे संबंधित जीवन में विजय प्राप्त होगी !

जब तक हम फिर से मिले, तब तक प्रभु आप सभी को आशीष दे,

पास्टर सरोजा म।

प्रभु का संदेश

लूका 21:36 ''इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।'' वचन कहता है 'इसलिये,' और आने वाले दिनों में, हमें 'जागते और प्रार्थना' करनी चाहिए। 'इसलिए' शब्द का क्या अर्थ है? प्रकाशितवाक्य 22:12 ''"देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।'' यहोवा कहता है, 'देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ, और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। जब परमेश्वर फिर आएंगे तो हमें परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य होना चाहिए।

योग्य होने का क्या अर्थ है? इस दुनिया में हम चुनाव के दौरान 18 साल की उम्र के बाद ही वोट कर सकते हैं। एक वकील, चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, मरीजों का ऑपरेशन नहीं कर सकता, क्योंकि वह केवल कानून की अदालत में मामलों को लड़ने के लिए योग्य है। इसके विपरीत, एक डॉक्टर कानून की अदालत के मामले नहीं लड़ सकता, क्योंकि वह केवल रोगियों की देखभाल करने और उनका इलाज करने के लिए योग्य है। हर कोई अपना काम करने के लिए योग्य है। उसी तरह, हमें उस भयानक दिन पर परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य होना चाहिए। योग्य होने का अर्थ है कि प्रभु को हममें वह गुण देखना चाहिए जो वह हमारे लिए चाहते है। इसलिए, हमें एक व्यवस्था दी गई है, जिसे हम लूका 21:36 में पढ़ते हैं ''इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।'' केवल जब हम सतर्क और प्रार्थनापूर्ण होते हैं तो हम अपने आप को उन सभी योजनाओं से दूर रख सकते हैं जो शैतान हमारे जीवन में रखता है।

जकर्याह 3 में, यहोशू, महायाजक, परमेश्वर के दूत के सामने खड़ा था, और शैतान उसका विरोध करने के लिए उसके दाहिने हाथ पर था, जो यहोशू के गंदे कपड़ों की ओर इशारा कर रहा था। परमेश्वर ने यहोशू के मैले वस्त्रों को हटाने और यहोशू को शुद्ध वस्त्र पहिने जाने की आज्ञा दी। यहोवा ने उससे कहा, *'मैं ने तेरे अधर्म को तुझ से दूर किया है, और तुझे उत्तम वस्त्र पहिनाए हैं।'* इसी प्रकार, हमारे जीवन में भी, हम में भी कमियां हैं और हम गंदे हैं। इन कमियों को शैतान यहोवा को दिखाएगा।

शैतान सब कुछ जानता है जो हमारे जीवन और हमारे घरों में हो रहा है। जिस तरह हमारे प्रभु हमारे बारे में सब कुछ जानते हैं, उसी तरह शैतान भी हमारे जीवन में होने वाली हर चीज को जानता है, और उससे कुछ भी छिपा नहीं है। शैतान लगातार हमारे पापों को प्रभु की ओर संकेत करता रहता है। इस सब के बीच, जैसे यहोशू परमेश्वर के दूत के सामने खड़ा हुआ, वैसे ही हमें भी प्रभु के सामने खड़े होने के योग्य होना चाहिए। शैतान हमारी कमजोरियों को परमेश्वर को दिखाता रहेगा, और वह हमारी गलतियों की ओर इशारा करता रहेगा। जब हम अच्छा करते हैं, तब भी शैतान हमारी गलतियों को संकेत करने के लिए कई लोगों को उठाने की कोशिश करेगा। लेकिन जब हम बुरे काम करते हैं, तो शैतान खुशी–खुशी हमारी गलतियों की ओर इशारा करेगा। शैतान लगातार हमारे जीवन में दर्द और दुख लाएगा, वह इस दुनिया के लोगों का इस्तेमाल हमारे जीवन में दुख लाने के लिए करता रहेगा। यह शैतान का काम है। लेकिन हम, परमेश्वर की सन्तान, परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार प्रार्थना करते रहना चाहिए। यहोवा ने यहोशू के मैले वस्त्र उतार दिए, और उसे अच्छे वस्त्र पहिना दिए, और वह परमेश्वर के दूत के सामने खड़े होने के योग्य हो गया। उसी तरह, हमारा परमेश्वर भी हम पर अपनी कृपा और दया दिखाएंगे, और हमें उसके सामने खड़े होने के योग्य बनाएंगे।

आज, प्रभु हमें हमारे जीवन में बुरे समय से दूर रहने की चेतावनी दे रहे हैं। हमें *'जागते रहना और लगातार प्रार्थना करना चाहिए।'* उस दर्द और दुख के बोझ तले दबे न हों जो शैतान आपके जीवन में लाता है। इसके बजाय, प्रभु पर ध्यान केंद्रित करें और प्रार्थना करना जारी रखें। परमेश्वर हमारे प्रतिफल को अपने साथ लाने का वादा करते है जब वह एक बार फिर आएंगे। परमेश्वर का प्रत्येक वचन गहरी जड़ें और बहुत स्पष्ट है, वचन में कोई अस्पष्टता नहीं है। हम निश्चित रूप से डूब जाएंगे, अगर हम जीवन में आने वाले दर्द और दुख में फंस जायेंगे, जो शैतान हमारे जीवन में लाता है, लेकिन फिर भी, हमें प्रभु पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए।

याद रखें कि कैसे पतरस ने तूफानी समुद्र पर चलते हुए परमेश्वर पर अपना ध्यान केंद्रित किया था? जिस क्षण उसने अपना ध्यान खो दिया, वह डूबने लगा; परन्तु जब उसने एक बार फिर परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित किया, तो वह परमेश्वर की कृपा से विजय के साथ पार हो गया।

इस संसार में भी, हम पर हर तरफ से अनेक परीक्षाओं और क्लेशों का दबाव पड़ सकता है।

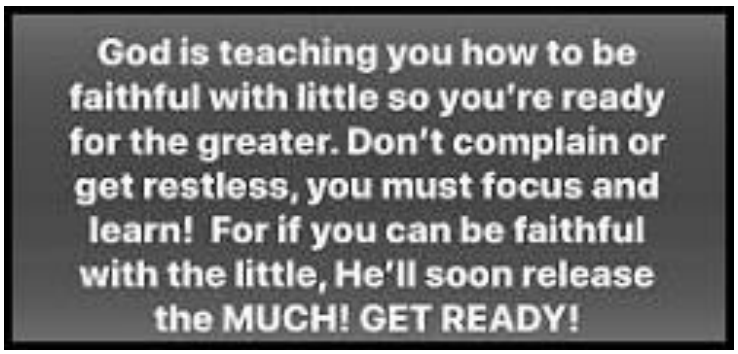

हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम केवल प्रभु पर केंद्रित रहें, नहीं तो हमारा जीवन निराशाओं से समाप्त हो जाएगा। सभी परीक्षणों और क्लेशों के माध्यम से, जब हम ध्यान केंद्रित करते हैं और प्रभु को पुकारते हैं, तो उनकी कृपा हमारे लिए पर्याप्त होती है। हम इस दुनिया में गलत कर सकते हैं और हम कई बार गिर सकते हैं। शैतान लगातार इस बात को लेकर प्रभु की ओर संकेत करेगा। परन्तु स्मरण रहे, यदि कोई धर्मी सौ बार गिरे, तो परमेश्वर उसे उठा लेंगे, और उसकी हर एक लड़ाई लड़ेंगे। हमें परमेश्वर के सामने यह कहते हुए कभी भी कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए कि *'मैं बाइबल पढ़ता हूँ और नियमित रूप से प्रार्थना करता हूँ। हालाँकि बाइबिल हमें अच्छी कहानियाँ सुनाती है और हमें प्रोत्साहित करती है, मेरे जीवन में कुछ भी सही नहीं हो रहा है, और जीवन में सब कुछ गलत हो रहा है।' हालाँकि मत्ती अध्याय 5 में, यीशु स्वयं सभी अद्भुत आशीर्वादों का उपदेश देते हैं, फिर भी मेरे जीवन में कुछ भी सही नहीं हो रहा है।'* हमें कभी भी कुड़कुड़ाना नहीं सीखना चाहिए, बल्कि हमें अपना पूरा विश्वास और भरोसा केवल प्रभु में रखना चाहिए। वह हमारे जीवन को आशीष देंगे, और अपने समय में, वह हमारे जीवन में सभी चीजों को अद्भुत बना देंगे।

प्रकाशितवाक्य 22:12 ''देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।''

लूका 21:36 ''इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।'' परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य होने के लिए जब वह हमारे प्रतिफल के साथ आता है, तो हमें 'जागते और प्रार्थना' करना चाहिए। फिलिप्पियों 3:20 ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं।'' जीवन में हमारी इच्छा क्या होनी चाहिए? हमें अकेले प्रभु की प्रतीक्षा करने की इच्छा होनी चाहिए।

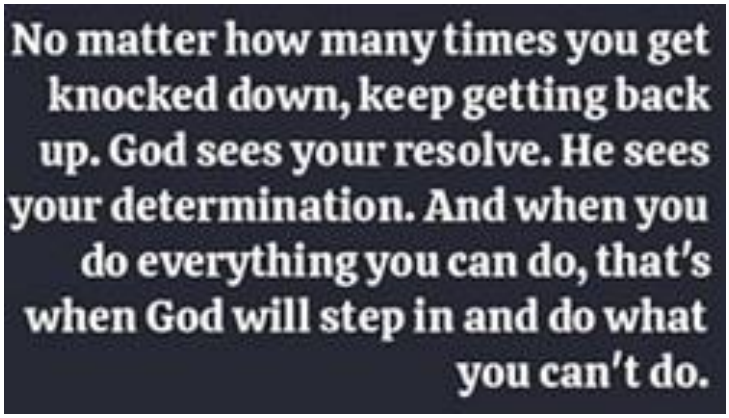

अपने वादे के अनुसार, यीशु ने कहा है कि वह हमारे रहने के लिए कई स्थान तैयार करने जा रहे है, और वह हमें अपने साथ ले जाने के लिए वापस आएंगे। हम चाहते हैं कि जिस दिन वह अपने चुने हुए को लेने आए, उस दिन हम योग्य पाए जाएं। वह दिन कितना भयानक होगा? हम नहीं जानते, और हम उस दिन की कल्पना भी नहीं कर सकते! याद रखें, हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, इसलिए हमारे दिल की इच्छा हमेशा उस दिन के बारे में सोचने की होनी चाहिए जब प्रभु हमें अपने साथ लेने आएंगे। इस संसार में, हमें प्रभु के वचन के द्वारा आज्ञाकारिता में जीना सीखना है, और साथ ही अपने जीवन में उनकी आज्ञाओं का पालन करना सीखना है; तभी हम स्वर्ग में अपनी नागरिकता के योग्य बनेंगे, और हमारा भविष्य परमेश्वर के राज्य में सुरक्षित होगा। सप्ताह दर सप्ताह, महीने दर महीने, हमारी इच्छा एक समान होनी चाहिए – परमेश्वर के वचन और आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी होने की।

अगर यह इच्छा हमारे जीवन में कमजोर हो जाती है तो यह हमारे लिए मुश्किल हो जाएगा। इसलिए हमें इस इच्छा को अपने जीवन में प्रतिदिन मजबूत करने की आवश्यकता है। कुलुस्सियों 3:1 ''अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।''

हर दिन हमें यह इच्छा करने की आवश्यकता है कि हम प्रभु के दाहिने हाथ पर बैठें, वैसे ही जैसे आज मसीह बैठे हैं। हम इस दुनिया के लोगों को अस्थायी सुख प्राप्त करने के लिए अविश्वसनीय काम करते हुए देखते हैं। कुछ अतिरिक्त धन प्राप्त करने के लिए, वे अपने पास जो कुछ भी है उसे भी खो देंगे; इसे निवेश करने के लिए, उदाहरण के लिए, लॉटरी टिकट में; इस उम्मीद के साथ कि वे बदले में ढेर सारा पैसा जीतेंगे। इस संसार के लोग तत्काल भौतिक लाभ की आशा में सभी झूठी चीजों में निवेश करते हैं। लेकिन अंत में सब कुछ विफल हो जाता है जब तक कि हम यीशु मसीह के जीवन और इस दुनिया में कष्टों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं; और कैसे उसने इस संसार पर विजय के साथ विजय प्राप्त की, और आज वह अपने स्वर्गीय राज्य में पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है। हाँ, हमारे लिए परमेश्वर का वादा है कि वह हमारे प्रतिफल के साथ वापस आएंगे और हमें अपने साथ ले जाएंगे।

जब हम एक नया फ्लैट बुक करते हैं, तो हम अपने ईएमआई भुगतान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हम सुनिश्चित करते हैं कि भुगतान में चूक न हो, और फिर हम इंतजार करते हैं कि फ्लैट कब तैयार होगा और हमें इसका कब्जा मिल जाएगा। इसी तरह, हमें भी लगातार हमारे लिए परमेश्वर के वादे पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए – कि वह हमारे प्रतिफल के साथ वापस आएंगे, और हमें अपने साथ अपने स्वर्गीय राज्य में ले जाएंगे।

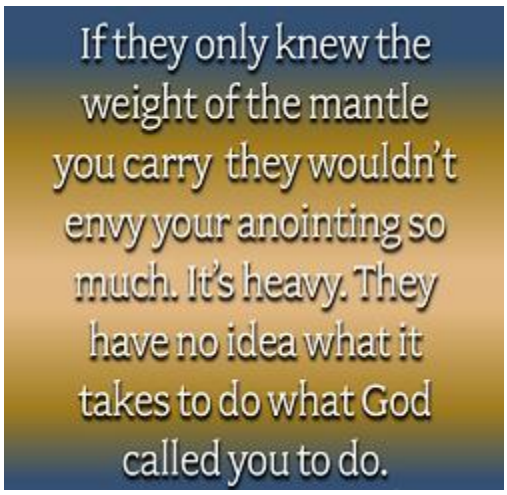

पवित्र शास्त्र में, पुराने और नए दोनों नियमों में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने बहुतों को अपनी सेवा करने के लिए बुलाया था। परन्तु कितने लोग उनकी बुलाहट के योग्य थे, कितनों ने उनकी पुकार का उत्तर दिया, और कितनों ने लापरवाही से उनकी पुकार को अनदेखा किया? पवित्रशास्त्र में, हम एसाव की कहानी के बारे में जानते हैं; कैसे उसने सिर्फ एक समय के भोजन के लिए अपना जन्मसिद्ध अधिकार बेच दिया। हाँ, प्रभु ने हम सभी को बुलाया है, लेकिन हम में से कितने इस बुलाहट के योग्य होंगे? इफिसियों 4:1–2 ''इसलिये मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो, अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो;'' हमारे परमेश्वर ने हम सभी को अपनी बहनें, भाई, बेटियां और बेटे होने के लिए बुलाया है। साथ ही, इस बुलाहट के साथ, वह चाहता है कि हम विनम्र, नम्र, और सहनशील बनें और जो कुछ हम कर सकते हैं उसे सहन करें और एक दूसरे से प्रेम करें। परन्तु हममें से कितने लोग उसके बुलावे के योग्य होंगे? पवित्र शास्त्रों में, हम देखते हैं कि प्रभु कई लोगों को उनके नाम से पुकारते हैं, अर्थात, मूसा, शमूएल, जक्कई।

उनकी सेवा करने के लिए, परमेश्वर ने बहुतों को अपने याजक, भविष्यद्वक्ता और राजा बनने के लिए बुलाया। नए नियम में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने बहुतों को अपना प्रचारक भी कहा। जब परमेश्वर अपने चुने हुओं को बुलाते है, तो वह अपने विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें नाम से पुकारते है।

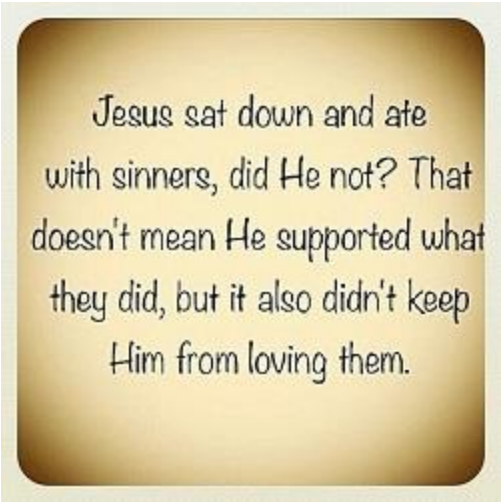

मत्ती 9:13 ''इसलिये तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो : 'मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ।' क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।'' प्रभु ने यहां नाम नहीं लिया, क्योंकि उन्होंने सभी पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाया है। उन्होंने हमें पश्चाताप करने के लिए बुलाया है ताकि हम उनके स्वर्गीय राज्य तक पहुँच सकें। आज, हम चारों तरफ से विभिन्न समस्याओं से दबे हुए हो सकते हैं, और हमारे पाप हमारे भीतर भारी हो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर हमें एक स्पष्ट बुलाहट दे रहे है ताकि हम पश्चाताप करें और उनका राज्य प्राप्त करें। हमारा परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी है; वह नहीं चाहते कि इस दुनिया में एक भी आत्मा का नाश हो। जैसा कि हमने पुराने करार में देखा है, उन्होंने लोगों को उनके नाम से बुलाया है। नए करार में भी, उन्होंने लोगों को उनके नाम से बुलाया है। लेकिन आज, वह हम सभी पापियों को पश्चाताप के लिए बुला रहे है, ताकि हम सभी केवल उनकी कृपा और दया से ही बच सकें। वह हमारे लिए आएं है और हमारे हर पाप से हमें बचाने के लिए तैयार है। इसलिए, हमें सतर्क और प्रार्थना करते रहना चाहिए। परमेश्वर हमारे अधर्म के पापी वस्त्रों को हटा देंगे और हमें अपने राज्य के योग्य बनाने के लिए धार्मिकता के नए वस्त्रों से सजाएंगे। परमेश्वर हम पापियों से प्रेम करते है परन्तु हमारे पापों से घृणा करते है। जब हमने अपने प्रभु को अपने उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में स्वीकार कर लिया है, तो हमें अपने जीवन में परमेश्वर को प्रथम रखते हुए, अपने भीतर परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त करने के लिए इस दुनिया की हर चीज को त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपनी जान गंवाने की कीमत पर भी हमें अपने प्रभु को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

यीशु ने अपने बारह शिष्यों को चुना और उनके पैर भी धोए। परन्तु पतरस ने कहा, *'हे प्रभु, तू मेरे पांव नहीं धो सकता,'* जिस पर यीशु ने उत्तर दिया, *'यदि मैं तेरे पांव न धोऊं, तो मुझ में तेरा कोई भाग नहीं।'* पतरस ने तुरन्त उत्तर दिया, *'हे प्रभु, तू मेरे पूरे शरीर को धो दे।'* , यदि हम यीशु के लहू से नहीं धोए गए, तो हम कभी भी उनके बच्चे नहीं बन सकते। इसलिए, हमें अपने आप को वचन की सच्चाई के सामने आत्मसमर्पण करना चाहिए, और अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए उनके लहू से धोना चाहिए।

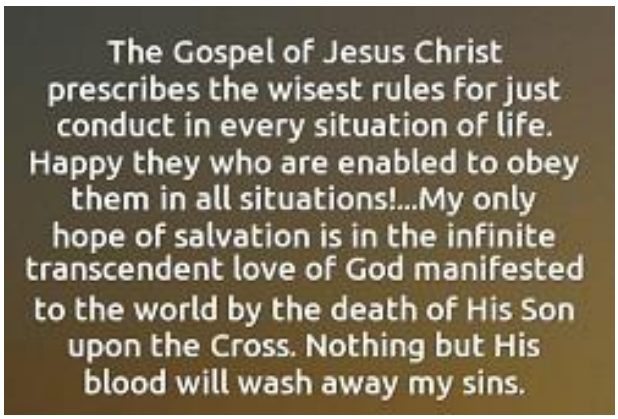

मरकुस 1:20 ''उसने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिए।''

मत्ती 4:21 ''वहाँ से आगे बढ़कर, यीशु ने और दो भाइयों अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को देखा। वे अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधार रहे थे। उसने उन्हें भी बुलाया।''

यहाँ हम देखते हैं कि यीशु ने बुद्धिमानों को नहीं बुलाया और अपने कार्यों को करना सीखा, बल्कि विनम्र मछुआरों को चुना। परमेश्वर ने जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को बुलाया, और वे तुरन्त अपनी नावें और अपने पिता के काम को छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए। हमने यह भी देखा है कि उनकी माता प्रभु का भय मानने वाली और धर्मी स्त्री थी। उसने यीशु से कहा कि वह अपने पुत्रों को उसके दोनों ओर रखे, एक उसकी दाहिनी ओर और दूसरा उसके बाईं ओर। पूरा परिवार प्रभु से डरने वाला था, और माता–पिता ने कभी भी बेटों से सवाल नहीं किया कि उन्होंने अपना मछली पकड़ने का व्यवसाय क्यों छोड़ दिया और यीशु का अनुसरण किया। इसका मतलब है कि पूरे परिवार ने प्रभु को स्वीकार कर लिया था, और इसलिए जब उन्होंने उन्हें बुलाया तो उन्होंने खुशी–खुशी यीशु मसीह का अनुसरण किया। हम जानते हैं कि अंत तक उनकी माता यीशु के साथ थीं। क्रूस पर भी, वह यीशु की माता मरियम के साथ थी। यीशु के सूली पर चढ़ने के तीसरे दिन, वह उन तीन महिलाओं में से थीं, जो यीशु की कब्र को देखने गई थीं और उन्होंने पाया कि उनका शरीर कब्र से गायब है। इस परिवार का यीशु के प्रति प्रेम बहुत गहरा था।

इसी तरह, अगर हमारे परिवार की जड़े प्रभु के साथ गहेरी हैं, तो वे परमेश्वर के प्रेम में मजबूत होंगे। यह महत्वपूर्ण है कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे परमेश्वर के भय और प्रेम में बने रहें, तो माता–पिता के रूप में हमें उनके अनुसरण के लिए एक उदाहरण होना चाहिए। हमें अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा और योजना के अनुसार जीना चाहिए। हमें प्रभु का भय मानना चाहिए, प्रतिदिन परमेश्वर का वचन पढ़ना चाहिए, और नियमित रूप से पारिवारिक प्रार्थना करनी चाहिए। हमें अपना जीवन कभी भी परमेश्वर के भय और प्रेम के बिना नहीं जीना चाहिए। जिन परिवारों के नाम बाइबिल में दर्ज हैं, वे इसलिए दर्ज हैं क्योंकि वे वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते थे; और उनकी कृपा से ही, उनके नाम पवित्र बाइबिल में प्रकट हुए।

हमारी इच्छा होनी चाहिए कि हमारे परिवार का नाम *'जीवन की पुस्तक'* में लिखा जाए। हमें परमेश्वर के सामने योग्य होना चाहिए, क्योंकि उसने अपना जीवन हमारे लिए पापियों के लिए दिया है। परमेश्वर हमें इस संसार के घमण्डियों और अभिमानियों से छुड़ाने आए है। हमें अपनी प्रार्थनाओं में दृढ़ता से जारी रहना चाहिए। एक परिवार में एक अच्छा प्रार्थना योद्धा परिवार के लिए कई जीत हासिल कर सकता है। हमारा परमेश्वर हमारे आँसू देखते है, वह उन्हें कभी व्यर्थ नहीं जाने देंगे। वह हमारे आँसुओं को एक बोतल में इकट्ठा करता है और हमारे परिवार को प्रार्थना में गिराए गए हर आंसू से आशीष देंगे। यहोवा कहता है, *'मैं शीघ्र आकर तुम्हारे कामों का फल लाऊंगा, तो जागते रहो और प्रार्थना करो।'*

2 तीमुथियुस 4:2 ''कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा।'' परमेश्वर आज्ञा देते है कि चाहे लोग हमारे आस–पास हों या न हों, हमें साहस और सच्चाई के साथ वचन का प्रचार करना जारी रखना चाहिए। जो भी वचन प्रभु परमेश्वर ने हम पर प्रकट किया है, हमें लोगों को उस वचन की सच्चाई का प्रचार और शिक्षा देनी चाहिए। यह शब्द पहले प्रचारक के लिए है। हमें लोगों को खुश करने और खुश रखने के लिए उपदेश नहीं देना चाहिए। हमें सत्य का प्रचार करना चाहिए, लोगों को हर गलत काम के लिए दोषी ठहराना चाहिए, और फिर वचन को पूरा करने के लिए प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमारी आशा और विश्वास केवल प्रभु में होना चाहिए। अगर प्रभु कल आते हैं, तो हमें यकीन होना चाहिए कि हम उनके साथ चलेंगे। मनुष्यों से कभी मत डरो और आश्चर्य करो कि वे हमारे और हमारे उपदेश के बारे में क्या सोचेंगे।

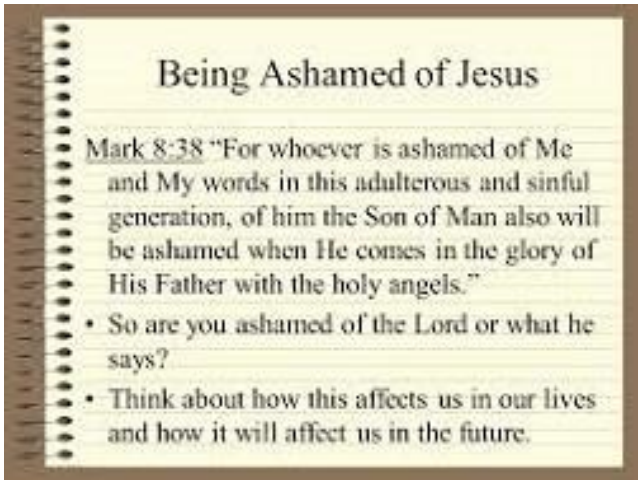

मूसा ने सदा हाथ उठाकर यहोवा की स्तुति की। निर्गमन 9:29 ''मूसा ने उससे कहा, "नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊँगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा और ओले फिर न गिरेंगे, इससे तू जान लेगा कि पृथ्वी यहोवा ही की है।'' इस मार्ग में, मूसा कहता है, *'जब मैं अपने हाथ उठाऊंगा और परमेश्वर की स्तुति करूंगा, तब गड़गड़ाहट बंद हो जाएगी और फिर ओले नहीं होंगे और हम जान लेंगे कि पृथ्वी यहोवा की है।'*

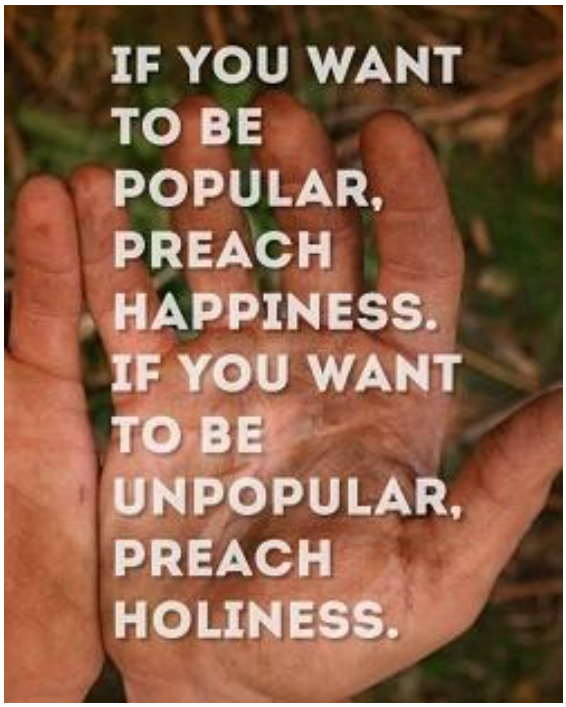

जब हम *'होसन्ना, होसन्ना, होसन्ना इन द हाईएस्ट'* गीत गाते हैं, तो हमारी स्तुति और हमारी आत्मा को उच्च स्तर पर प्रभु तक पहुंचना चाहिए। हम शारीरिक रूप से यहां हो सकते हैं, लेकिन हमारी स्तुति और हमारी आत्मा को 'उच्चतम' स्वर्ग तक पहुंचना चाहिए।

यहेजकेल 44:1–2 ''फिर वह मुझे पवित्रस्थान के उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया, जो पूर्वमुखी है; और वह बन्द था। तब यहोवा ने मुझ से कहा, "यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए; कोई इससे होकर भीतर जाने न पाए; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस से होकर भीतर आया है; इस कारण यह बन्द रहे।''

भविष्यवक्ता यहेजकेल ने भविष्यवाणी की थी कि यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, पवित्र स्थान का द्वार तब से बंद था। यीशु निश्चय उसी स्थान पर उतरेंगे और एक बार फिर द्वार खोलेंगे। हमारे प्रभु परमेश्वर अकेले बंद फाटकों को खोल सकते हैं, और कोई भी आदमी ऐसा नहीं कर सकता। जब आप इस्राएल की यात्रा करेंगे, तो आप देखेंगे कि कैसे मुख्य मंदिर के द्वार आज भी बंद हैं। लोग केवल उस पवित्र स्थान के चारों ओर लड़ सकते हैं और दावा कर सकते हैं कि यह उनका है, लेकिन सच्चाई यह है कि मुख्य द्वार एक बार फिर से यीशु के दूसरे आगमन पर ही खोला जाएगा।

यह जकर्याह 14:4 में भविष्यवक्ता जकर्याह द्वारा भविष्यवाणी की गई है ''उस दिन वह जैतून के पर्वत पर पाँव रखेगा, जो पूर्व की ओर यरूशलेम के सामने है; तब जैतून का पर्वत पूर्व से लेकर पश्चिम तक बीचोबीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा; तब आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्षिण की ओर हट जाएगा।''

उस समय मंदिर के फाटक खुलेंगे। तभी सभी लोग परमेश्वर की शक्तिशाली सामर्थ और शक्ति को जानेंगे।

Jesus wept once; possibly more than once. There are times when God asks nothing of His children except silence, patience, and tears.

जब यीशु इस पृथ्वी पर चले, तो उन्होंने सभी को वचन का प्रचार किया। आज भी, वचन के छिपे हुए सत्य को पापियों और खोई हुई आत्माओं को प्रचारित किया जाना चाहिए।

हम जानते हैं कि यीशु यरूशलेम को देखकर कैसे रोए। आज, हमारे प्रभु यीशु हमारे लिए रो रहे हैं क्योंकि इस दुनिया में सब कुछ घटित होगा जैसा कि 'वचन' में दर्ज है।

यशायाह में, हमने कुम्हार और मिट्टी के बारे में पढ़ा है। इस्राएलियों को मिट्टी माना जाता था, और यीशु, कुम्हार जिसने उन्हें ढाला था।

एक दिन मिट्टी दौड़ती हुई कुम्हार के पास आई और उससे कहा कि उसे एक सुंदर बर्तन में ढाला जाए। कुम्हार ने पानी से मिट्टी को सख्ती से आकार देना शुरू किया, लेकिन मिट्टी परेशान हो गई, क्योंकि कठोर मालिश ने उसे चोट पहुंचाई; इसलिए, क्रोध में, मिट्टी ने कुम्हार से कहा, *'मैं एक सुंदर बर्तन नहीं बनना चाहता।'*

इसके बाद, मिट्टी का एक और टुकड़ा आया और कुम्हार से कहा कि वह एक सुंदर बर्तन बनना चाहता है, और उसे किसी भी चोट की हद्द तक भी सख्ती से आकार देने में कोई आपत्ति नहीं है। कुम्हार ने वही प्रक्रिया दोहराई और मिट्टी को एक पहिये पर रख दिया, और उसे घुमाने लगा। जैसे ही पहिया घूमना शुरू हुआ, मिट्टी को चक्कर आने लगा, और उसने कुम्हार को रुकने के लिए कहा, यह कहते हुए कि उसे अब एक सुंदर बर्तन बनने की इच्छा नहीं है।

अब मिट्टी का तीसरा टुकड़ा कुम्हार के पास आया और कहा, *'मुझे जोर से मालिश करने और पहिया पर रखे जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन मैं एक सुंदर बर्तन बनना चाहता हूं।'* कुम्हार ने सभी चरणों को दोहराया। जब वह पहिए पर लगी मिट्टी से कटने और अलग होने की अवस्था में पहुंचा, तो मिट्टी दर्द से कराह उठी, *'यह क्या कर रहे हो? क्या तुम मुझे काटना और मारना चाहते हो? मैं अब और सुन्दर घड़ा नहीं बनना चाहता।'* फिर वह भाग गया।

साथ में मिट्टी का चौथा टुकड़ा आया जिसने कुम्हार से कहा, *'तुम मुझे जोर से आकार दो, मुझे पहिया पर घुमाओ, और मुझे काट दो। मुझे इससे कोई समस्या नहीं है, लेकिन मैं एक सुंदर बर्तन बनना चाहता हूं।'* कुम्हार ने पहले की तरह सभी चरणों को दोहराया। अब, उसे पहिए से काटने के बाद, उसे पकाने के लिए भट्टी में रखना पड़ा, जिसमें मिट्टी चिल्ला रही थी, *'मैं भट्टी में पकना नहीं चाहता,'* और भाग गया।

जब तक हम भट्टी में नहीं जाते, हम कभी भी प्रभु के लिए एक सुंदर पात्र नहीं बन सकते! प्रभु के प्रिय बनने के लिए, हमें अपने आप को पूरी तरह से उनके हाथों में आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता है। तभी वह हमें अपनी महिमा के लिए सुन्दर बर्तन बना सकते है।

हम अपने परमेश्वर से बहुत प्यार कर सकते हैं, लेकिन निश्चित रूप से, हमारा परमेश्वर हमें उससे सौ गुना अधिक प्यार करते है जितना हम उससे प्यार करते हैं। इसलिए, एक सुंदर बर्तन बनने के लिए, हमें बर्तन बनाने की हर प्रक्रिया को अच्छी तरह से करना चाहिए। प्रभु के योग्य माने जाने के लिए, और ताकि परमेश्वर हम में वे सभी गुण पाए जो वह अपने बच्चों में चाहते है, परमेश्वर आज हमें चेतावनी देते है कि हमें हमेशा देखना और प्रार्थना करना चाहिए।

प्रभु अपने वचन के द्वारा हम में से प्रत्येक को आशीष दें!

पास्टर सरोज म।